''सहायता के बाद अहसान न जताएं''

– युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं, 11 मई।

युवाचार्य महाश्रमण ने जैन तत्व दर्शन की व्याख्या कराते हुए कहा कि जिस तरह से धर्मास्तिकाय प्रत्येक व्यक्ति की गति में सहायता करता है, पर किसी पर अहसान नहीं जताता, वैसे ही व्यक्ति भी दूसरों की सहायता करें तो उसे अहसान नहीं जताना चाहिए।

उन्होंने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि जिस तरह से पथिक के विश्राम करने में वृक्ष सहायक होता है वैसे ही अधर्मास्तिकाय स्थिर रहने में सहायक होता है। उन्होंने आकाशास्तिकाय को सम्पूर्ण लोक में फैला तत्व बताते हुए कहा कि आकाश तत्व के कारण ही प्रत्येक वस्तु को रहने का स्थान मिलता है। उन्होंने कहा कि ये तीनों तत्व अमूर्त हैं, शाश्वत है। इसके विपरीत पुद्गल मूर्त है। इसको आंखों से देख सकते हैं। विभिन्न भागों में बांट सकते हैं।

युवाचार्य महाश्रमण ने जैन तत्व दर्शन को गहराई से समझना आवश्यक बताया। उन्होंने आचार्य तुलसी द्वारा रचित आख्यान ''डालिम चरित्र'' का सरस एवं रोचक शैली में वाचन किया।

''राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर 21 से''

लाडनूं, 11 मई।

राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य एवं युवाचार्य महाश्रमण के निर्देशन में जैन विश्व भारती प्रांगण में राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन 21 मई से 30 मई तक किया जायेगा। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित इस शिविर में सम्पूर्ण देश से 13 से 18 वर्ष के बालक–बालिकाएं भाग लेंगे। शिविर संयोजक भूपेन्द्र मूथा ने बताया देश का भविष्य भावी पीढी पर टिका है। इस पीढी को संस्कारी बनाने के लिए इस शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर में विभिन्न साधु–साध्वियों एवं समणीगण के द्वारा प्रशिक्षण दिया जायेगा।